अमृत पर्व

दशहरा !

परम योगी स्वामी सनातन श्री

अमृत पर्व : दशहरा!

परम योगी स्वामी सनातन श्री

सनातन आश्रम कुर्सी रोड,
लखनऊ

मूल्य : "सनातन प्रेम"

★

★

नोट : पुस्तक में प्रकाशित किसी भी विचार एवं त्रुटि के लिय मुद्रक का किसी भी प्रकार का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

★

प्राप्ति स्थानः

❖ **श्री सनातन आश्रम**

गौरा बाग, कुर्सी रोड,
गुडम्बा थाने के सामने, लखनऊ-20
मोबाइल : 8707651736, 8853102374

★

❖ **शिव शान्ति सदन**

179, सराय हसनगंज,
बालाजी साड़ी के सामने,
बाबूगंज पुलिस चौकी के सामने,
लखनऊ-226020
मोबाइल : 98380 77297, 70809 16201

अमृत पर्व : दशहरा!

– परम योगी स्वामी सनातन श्री
सनातन आश्रम कुर्सी रोड,
लखनऊ

महाविष्णु ने त्रेता युग में अपने नाना देवताओं के साथ भूमण्डल पर अवतरित होकर महान् लीला की। असुरों एवं असुरी शक्तियों का विनाश किया। तपस्वियों, ऋषियों एवं साधकों को सत्य का भान कराया एवं उनकी रक्षा की। मनुष्य मात्र को मर्यादित किया।

लीला का रहस्य क्या है?

लीला शब्द का अर्थ है सत्य का नाटकीय प्रस्तुतीकरण**!** अर्थ से ध्येय स्पष्ट हो गया। श्रीभगवान् लीला द्वारा हमारे ही जीवन को नाटकीय ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। बात है 'स्वर्ग' और 'नर्क' की। 'दशरथ' और 'दशानन' की। विचार करें 'दशरथ' में भी 'दश' है और 'दशानन' में भी 'दश' है। यही 'दश' दशहरा और विजयादशमी में भी समाया हुआ है।

'दश' की लीला क्या है?

'रथ' (लगाम लगाना) लिया। जिसने दश इन्द्रियों को अर्थात् दसों; दश इन्द्रियों का निग्रह (रथ) किया - दशरथ कहलाया और जा मिला घट-घट वासी, अजर-अमर अविनाशी, स्वयंभू, आत्मारूपी, भगवान् श्रीराम से**!**

'दश' इन्द्रियाँ जिसकी बनी दश मुंह **!** इन्द्रियों की विषय वासना में हो गया जो लिप्त - कहाया दशानन रावण **!** मारा गया भगवान श्रीराम से **!**

स्व़ + अर्ग = स्वर्ग तथा ऩ + अर्क = नर्क

स्व अर्थात आत्मा और अग अर्थात् परिधि। जो दशरथ बन आत्मा की

परिधि में व्याप्त हुआ उसे स्वर्ग हुआ। 'न' माने नहीं 'अर्क' माने आत्मा रूपी सूर्य को नकार कर विषय वासनाओं को दश मुंह बन बैठा उसे नर्क हो गता। नर्क को स्वर्ग में बदलने वाला दशरथ और स्वर्ग को नर्क में ढालने वाला दशानन ।

मन ही दशरथ; मन ही दशानन ! तुमने जीता इसको तो दशरथ बन राम से मिला देना। यदि यह मन जीत गया तुमको तो दशानन बन राम से तुम्हारा सर्वनाश करा देगा। कैसे?

जब भी धरती की बेटी-सीता, कौन है सीता? अरे ! धरती की बेटी, प्रकृति की बेटी-यह देह तुम्हारी, यह जीव की प्रकृति ही तो सीता है। जीव मात्र ही तो सीता है ! आत्मा ही तो घट-घट वासी राम है। मन की बदलती स्थितियां ही तो दशरथ और दशानन हैं।

हाँ, जब भी यह सीता, दशरथ मार्ग का अनुसरण न कर दशानन मार्ग पर चलने लगती है-आत्मा राम भी चल देते हैं ढूँढने स्वर्ण-मृग जीवन के स्वर्ण क्षणों का स्वर्ण मृग ! जिसे यह अपनी विषय वासनाओं के कारण नष्ट कर चला! फिर क्या हुआ?

मन दशानन बना अर्थी बाँध रस्सी से ले चला वायु मार्ग से ! लंका! दक्षिण ! पहली बार पाँव दक्षिण हुए ! चल दिये बँधी सीता की भांति श्मशान घाट ! चिता की लकड़ियों पर राम की विरह की अग्नि में जल भस्म हो गयी देह ।

भस्मी ने पानी का संग किया और जंगलों की अशोक वाटिकाओं में डोलती फिरी। पुकारती राम को ! हा राम ! हा राम !

प्रकट हो गये भगवान् राम ! प्रत्येक पेड़-पौधों के अन्तराल में बनकर आत्मा.घट-घट वासी आत्मा ही तो राम है, सो ही तो ॐ है।

अ + उ + म = ॐ

अ से अस्तित्व, तत्वधारक ब्रह्म! उसे उत्पत्ति, सृजन, सृजक विष्णु। म से मृत्यु, मृत्युञ्जय महेश! धारक, सृजक, संहारक-ब्रह्मा, विष्ण, महेश !

यही GOD भी है। G से जनरेटर, O से आपरेटर तथा D से डिस्ट्रायर [अलिफ, लाम, हे-अल्लाह ! धारण, सृजन और संहार की लीलाओं द्वारा सचराचर का पुनः पुनः प्रकट करने वाला आत्मा घट-घट वासी राम !

धारक बन भस्मी को ग्रहण किया, संहारक बन अग्नियों से पवित्र किया। सृजक बन सृजन करने लगा। एक ही भस्मीय वही पानी। वह अंगूर भी है, खट्टा नींबू, कड़वी मिर्च, सफेद गोभी तो काला बैगन, चम्पा कहीं, तो कहीं चमेली।

पुनः उन्हीं फलों को भोजन के रूप में एक दम्पत्ति ने ग्रहण किया और धारण, सृजन और संहार के यज्ञों द्वारा वह भोजन रक्त, मांस में बदल गर्भ में पुनः बालक का स्वरूप ले सका। अग्नि परीक्षाओं द्वारा लौटी सीता-प्रकृति-धरती की बेटी, यह देह हमारी !

गर्भ के क्षीर सागर से, गर्भ रूपी कुम्भ से जब पुनः देह बाहर हुई, नाल कटी-धनुष भंग हुआ-आत्म राम ने प्रकट हो वरण किया इसका! शायद इस बार दशरथ मार्ग का अनुशरण करे। जीव और आत्मा के द्वैत को योग मार्ग से अद्वैत करे।

प्रश्न उठता है दशरथ और दशानन, स्वर्ग और नर्क, उत्तरायण और दक्षिणायन, देव यान और पित्र यान क्या है ? इनका चलन कैसा है ? इनकी लक्ष्मण रेखाएँ क्या हैं ?

दस इन्द्रियों का निग्रह कर दशरथ बनना, 'स्व' रूपी आत्मा सूर्य की सीमाओं में नित्य प्रवेश करना, शरीर को देवालम बनाकर स्वयं पुजारी बन आत्मा देव हेतु ही इन्द्रियों का प्रयोग तथा चेष्टा रत रहना। देह रूपी देवालय को सदा पवित्र रखना ही उत्तरायण है। यही दशरथ है। इसका यान स्वयं देव अर्थात आत्मा राम है।

देह को देवालय क्यों कहा ?

विचार करो ! मन्दिर तुम्हारी ही तो तस्वीर है। जैसे साधना में तुम पल्थी मारकर बैठते हो । समाधि लेते हो। पल्थी के जैसा चबूतरा।

धढ़ के जैसा गोल कमरा सिर के जैसा गुम्बद, जटाओं के जूड़े सा कलश और आत्मा जैसी मूरता लो यही तो है मन्दिर ?

मन्दिर तुम्हारा शरीर, मूरत आत्मा राम और मानव रूप तुम पुजारी। आवो अब पढ़ डालें दशरथ को, देव यान को, उत्तरायण मार्ग को। पहचानें अपनी मर्यादाओं को। अपने धर्म को।

पूछो अपने आप से : -

1- जैसे पुजारी मंदिर को सदा पवित्र रखता है। कभी गन्दा नहीं होने देता-क्या तुमने इस शरीर मन्दिर को पवित्र रखा। ईर्षा, द्वेष, घृणा, व्यभिचार से गन्दा तो नहीं किया?

2- पुजारी सदा शुद्ध और सात्विक भोजन का भगवान को भोग लगाता है। शराब, मांस, अण्डा, तम्बाकू आदि नशीली वस्तुएँ कभी नहीं चढ़ाता। तुमने भी कब खाया ? तुमने भी तो आत्मा राम को भोग लगाया जिसने उसे रक्त मांस में यज्ञ किया। तो जो वस्तु उनकी मूरत पर नहीं चढ़ाई जा सकती-तुम साक्षात आत्मा परमेश्वर पर कैसे चढ़ा सकते हो। सोचो।

3- क्या पुजारी मूरत के मुकुट और आभूषण चुरा कर बेच सकता है। नहीं! कदापि नहीं !! तो ये इन्द्रियाँ तुम्हारी आत्मा राम का आभूषण ही तो है। तुम इन्हें विषय वासनाओं के बाजार में कैसे बेच सकते हो? इनका आत्म यज्ञार्थ प्रयोग करो। स्वयं को अभिशप्त मत करो।

4- क्या पुजारी मन्दिर का मालिक है ? नहीं ! मालिक तो भगवान पुजारी तो निमित्त है अर्थात ट्रस्टी है। उसी प्रकार सोचो जब तुम थाली भर भोजन से भौं का एक रोम नहीं बना सके तो इस शरीर के मालिक हो अथवा ट्रस्टी ? निमित्त बन कर जीना सीखो।

5- जब शरीर का स्वामित्व भगवान ने नहीं दिया तो तुम मकान, दुकान के मालिक कैसे हो सकते हो ? अन्धता का त्याग करो। जीवन को ट्रस्टीशिप का अमृत पिलाओ स्वामित्व का अभिशाप नहीं।

6- भगवान रामने शबरी के जूठे बेर खाये थे। आत्मा होकर भगवान आज भी हर शबरी के अर्थात जीव मात्र की जूठन को रक्त में बदलते हैं-राम भेदभाव नहीं करते हैं। तुम ऊँच, नीच, भेद-भाव के महा अभिशाप में तो नहीं फंस बैठे?

7- जिस ईश्वर ने आत्मा होकर तुम्हें तन दिया। तुम्हारी जूठन को रक्त में बदला। क्या कोई फीस अथवा तनखाह ली? बोलो! जब राम आत्मा होकर तुम्हारा निष्काम नौकर बना है तो यह तन किसलिये दिया? समाज को नोचने के लिये ? नहीं ! ईश्वर निष्काम सेवा द्वारा यह तन तुम्हारा जो बना रहे हैं - मात्र निष्काम सेवा के लिये ! क्या सेवा की?

8- चोर ने चोरी की, डाकू ने डाका डाला, तपस्वी ने तप किया-राम ने आत्मा होकर सभी को समान भाव से जीवन के क्षण प्रदान किये। उन्होंने आत्मा होकर आत्मा के धर्म को ही निभाया। तुम भी दूसरों के दोषों से प्रेरित होकर स्वयं को नष्ट मत करो। अपने धर्म का आचरण करो।

9- भगवान् भी जन-जन का सम्मान तभी पाता है जब आत्मा होकर हर शबरी के जूठे बेर खाता है। सम्मान सेवा में है रावण, रावण की सुनहरी लंका में नहीं। लंका न बनाओ राम जैसे सेवक बनो।

10- तुमने गाय को खूँटे के साथ जंजीर से बाँध रखा है। क्या गाय से जंजीर बंधी है? एक शैतान लड़का जंजीर खोलकर ले गया। क्या गाय को दुख है? नहीं। दुखी तो तुम हो, तुम्हारी दस रूपये की जंजीर खो गयी। तो बताओ जंजीर से तुम बँधे थे या गाय ? इसी प्रकार तुम भौतिकताओं और वासनाओं को बाँधते नहीं हो। स्वयं बँध जाते हो। जड़त्व से बँधो नहीं। राम से बँधना सीखो !

अब उठो ! जलते हुए दशहरे के रावण के सामने खड़े हो जाओ। पूछो। स्वयं से पूछो। कहीं तुम धोखे से अपना पुतला स्वयं तो नहीं जला रहे हो?

यदि तुम दश इन्द्रियों को दश मुंह बनाकर दशानन रावण बन बैठे हो तो तुम्हारा शरीर लंका हो गया। जीव रावण तो तन लंका। इसका नित्य दहन होगा-ईर्षा, द्वेष, घृणा, रोग, विपत्ति, अभाव और भय से। फिर एक दिन-दशहरे के रावण की तरह चिता की लकड़ियों पर भस्म होगा। देखो, देखो ! जलता हुआ रावण !

यदि तुम दशरथ बने तो तन हुआ अवध ! दशरथ अवध में राज्य करते हैं । अवध अर्थात् जिसका कोई वध न कर सके !

श्रीभगवान् ने कहा मृत्यु तो मात्र वस्त्र के बदलने जैसा है। जैसे पुराने वस्त्रों को उतार व्यक्ति नये वस्त्र धारण करता है वैसे जीव पुरानी देह को त्याग नयी देह धारण करता है।

परन्तु जिसने विषयों में फंसकर अपने संस्कारों, विचारों, संकल्पों और परम उद्देश्यों की हत्या कर दी। उसका उद्धार कसे होगा ! उसने चस्त्र बदला नहीं। वह तो घृणित मौत मर गया।

प्रत्येक परिवार की परम आवश्यकता : सनातन संदेश
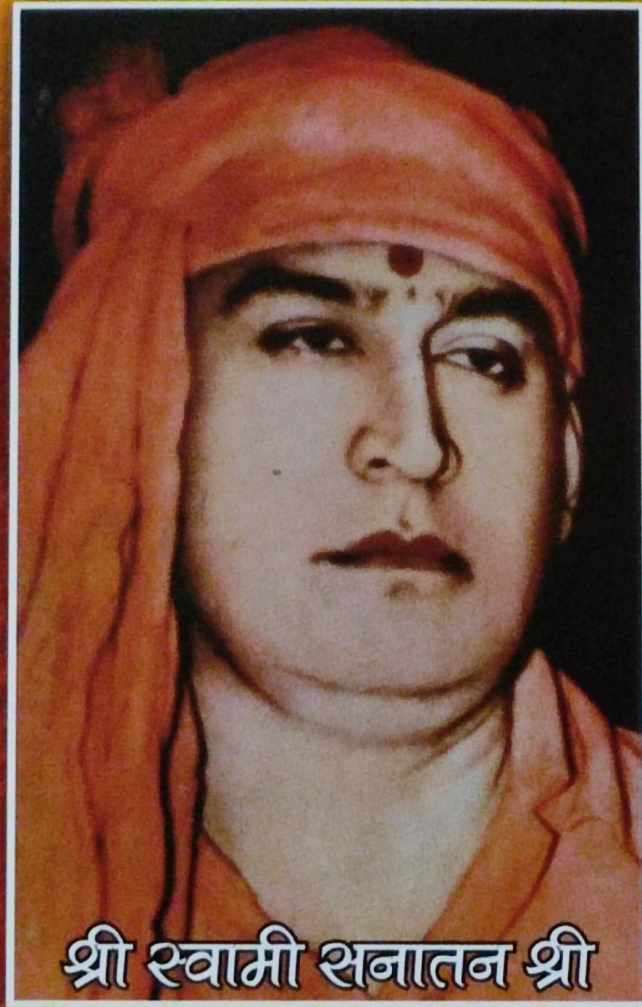
सीमिति साधन के अतिरिक्त बस नारायण ही हैं। उपेक्षा है, वंचक भाव है, घुटन है, इसके बाद भी जीवन को ईश्वरमय बनाने की इस प्रभु की बगिया की, रक्षा, सेवा का संकल्प है।

सनातन संस्कृति के मौलिक स्वरूप को यथा सामर्थ्य फैलाने की चाहत है।

–सनातन प्रेम

-:प्राप्ति स्थान:-

❖ **श्री सनातन आश्रम**
गौरा बाग, कुर्सी रोड,
गुडम्बा थाने के सामने, लखनऊ-20
मोबाइल : 8707651736, 8853102374

❖ **शिव शान्ति सदन**
179, सराय हसनगंज,
लखनऊ-226020
मो0: 9838077297, 7080916201